पुरंदर के इस वीर का सर्वोच्च बलिदान – मुरारबाजी

नरवीर मुरारबाजी देशपांडे का भव्य स्मारक - पुरंदर किला





युद्ध के मैदान से पुरंदर किले का दर्शन

पुरंदर किले के अभियान में मुगलों की सैन्य गतिविधियों को कैसे नियोजित और क्रियान्वित किया गया होगा, इसका चित्रण भाग 1 में दिखाया गया है।



इस शोध कार्य की सीमाएँ

❖यह शोध कार्य इस प्रमेय पर आधारित है कि युद्धशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यदि आजकल के सैन्य अधिकारियों को आदेश मिले, तो वे शोध की स्वतंत्रता लेकर, उस समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, इस तरह के अभियानों की योजना कैसे बनाएंगे और उन्हें कैसे अंजाम देंगे।

❖भारतीय इतिहास में कई स्थानों पर ऐतिहासिक लड़ाइयों का विवरण विश्वसनीय साक्ष्यों के अभाव में उपलब्ध नहीं है।ऐसे समय में, उन लड़ाइयों में शामिल व्यक्तियों के जीवन के व्यवहार, शौर्य, धैर्य, और शस्त्रों के ज्ञान को ध्यान में रखते हुए ये अभियान प्रस्तुत किए गए हैं।

❖यह दावा नहीं है कि वास्तविक घटनाएँ ऐसी ही हुई थीं।यह दिखाने का प्रयास है कि युद्ध कैसे हुआ होगा।

पुरंदर अभियान में मुगलों का घटना चक्र 1

दिनांक और स्थान	मराठों की ओर से घटनाएँ
३० सितंबर १६६४ दिल्ली दरबार	औरंगज़ेब ने मिर्ज़ा राजे जयसिंह को "सिवा को दफ़ा करो" (खत्म करो) का कार्य सौंपा।
६ जनवरी १६६५ २० जनवरी १६६५ १० फरवरी १६६६	हांडिया के पास नर्मदा पार की गई बुरहानपुर किले में सेना इकट्ठा कर औरंगाबाद में मुअज़्ज़म को इस अभियान में उसकी दखलंदाजी न हो, इसलिए जानकारी दी गई।हांडिया के पास नर्मदा पार की गई। बुरहानपुर किले में सेना इकट्ठा कर औरंगाबाद में मुअज़्ज़म को इस अभियान में उसकी दखलंदाजी न हो, इसलिए जानकारी दी गई।
३ से ७ मार्च १६६६	पुणे में जसवंत सिंह से पुणे विभाग की कमान संभाली।
१५ मार्च के अंत तक	शिवाजी द्वारा सुलह के पत्रों की उपेक्षा। सासवड पहुँचे और अभियान की सैन्य तैनाती शुरू हुई।

पुरंदर अभियान में मराठों का घटना चक्र 1

दिनांक और स्थान	मराठों की ओर से घटनाएँ
फेब्रु १६६५	महाराजा राजगढ़ से सैन्य गतिविधियों पर नज़र रख रहे थे। सासवड की ओर जाते हुए देखकर महाराज लोहगढ़ चले गए।
फेब्रु - मार्च १६६५	पुरंदर के किलेदार और सरनौबत नेताजी पालकर परिंडा के आसपास मुगल क्षेत्र में उपद्रव मचा रहे थे।
मार्च १६६५	आदिल शाही के साथ नरमी का रुख तय कर महाराजाओं की ओर से संदेश भेजे जा रहे थे।
मार्च १६६५	आदिल शाह द्वारा महाराजाओं पर दक्षिण से अभियान चलाकर हमला करने पर मुगलों को मिलने वाली वार्षिक जागीर में छूट देने के मिर्ज़ा के प्रयासों को रोकना था।

पुरंदर किला जीतने के समय का घटना चक्र 2

दिनांक और स्थान	मुगलों की ओर से घटनाएँ
३० मार्च १६६५	पुरंदर किला जीतने की कमान दिलेर खान ने संभाली।
२ एप्रिल १६६५	महाराजा ने मुगल सरदारों की बिखरी हुई सेना पर यात्रा के दौरान छापेमारी कर परेशान करने की नीति अपनाई।
3 से १४ अप्रैल १६६५	वज्रगढ़ को तोपों की मार से परेशान किया गया।
१५ अप्रैल के अंत तक	वज्रगढ़ के बुर्ज को सुरंग लगाकर उड़ा दिया गया और किला मुगलों ने ले लिया।
मई - जून १६६५	ममहत्वपूर्ण किलों की घेराबंदी, पुरंदर की रसद का कटना, जनता को परेशानी न हो इसलिए सुलह की बातचीत शुरू हुई।

पुरंदर किला जीतने के समय का घटना चक्र 2

दिनांक और स्थान	मराठों की ओर से घटनाएँ
मार्च १६६५	पुरंदर के किलेदार का सैन्य गतिविधियों पर ध्यान। किले की ओर आ रही तोपों के काफिले पर हमले जारी। महाराजा से अतिरिक्त कुमुक की मांग।महाराज लोहगढ़ चले गए।
१४ अप्रैल १६६५	पुरंदर किलेदार और वज्रगढ़ किलेदार किले से पत्थर और बड़े बोल्डर लुढ़काकर नीचे जमा हुई मुगल सेना को ऊपर चढ़ने नहीं दे रहे थे। पुरंदर के आसपास के क्षेत्र में मुगलों की लूटपाट पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जा रहा था।
मई १६६५	पुर्तगालियों और अंग्रेजों के साथ नरमी का रुख तय कर महाराजाओं की ओर से संदेश भेजे जा रहे थे।
जून १६६५	आदिल शाह को मुगलों को मिलने वाली वार्षिक जागीर में छूट देने के मिर्ज़ा के प्रयासों को रोकना था

पुरंदर संधि के संदर्भ में घटना चक्र 3

दिनांक और स्थान	मुगलों की ओर से घटनाएँ
9 ६जून १६६५	रघुनाथ पंत को मिर्ज़ा राजे ने बेल-तुलसी देकर अभयदान दिया।
१० जून १६६५	महाराज मिर्ज़ा के दरबार में उपस्थित हुए।
११ जून १६६५	संधि की शर्तें रात तक तय होती रहीं।किलों का स्वामित्व तुरंत सौंपना शुरू हुआ।
१२ जून १६६५	रोहिड़गढ़ पर कब्जा करने के लिए भेजा गया।
१३ जून १६६५ दोपहर	दिलेर खान संधि वार्ता से बाहर रखे जाने से नाराज था। महाराजा द्वारा पुरंदर किले की चाबियाँ बिना युद्ध के मिलने पर दिलेर खान ने उनका सत्कार किया।
१४ जून १६६५	संधि की बातचीत जारी।औरंगज़ेब की मंजूरी के लिए संधि का मसौदा

पुरंदर किला जीतने के समय का घटना चक्र ३

दिनांक और स्थान	मराठों की ओर से घटनाएँ
६ जून १६६५	महाराजा ने राजगढ़ छोड़ा और नसरापुर के क्षेत्र में आकर रुक गए।
१० जून १६६५	चिव्हे घाट में घुड़सवारी छोड़कर वे पालकी में बैठकर आगे बढ़े। मिर्ज़ा राजे ने एक सम्मानित हाथी भेजकर उन्हें अपने शामियाने तक लाया।
११ जून १६६५	उपस्थित सरदारों का परिचय और मान-सम्मान का आदान-प्रदान हुआ। महाराजा ने अपने मुख्य सलाहकारों के साथ पहले क्या तय हुआ था, उसकी समीक्षा की होगी।
१२ जून १६६५	पुर्तगालियों और अंग्रेजों के साथ नरमी का रुख तय कर महाराजाओं की ओर से संदेश भेजे जा रहे थे।
१३ जून १६६५	दिलेर खान को कहा, "ये लो किले की चाबियाँ।मैं ये देने आया हूँ!"
१४ जून १६६५	सिंहगढ़ कीरत सिंह के हाथ में चला गया। जीजाबाई सहित सभी ने किला छोड दिया।

युद्ध के मैदान से पुरंदर किले का दर्शन

पुरंदर किले के अभियान में मुगलों की सैन्य गतिविधियों को कैसे नियोजित और क्रियान्वित किया गया होगा, इसका चित्रण भाग 1 में दिखाया गया है।



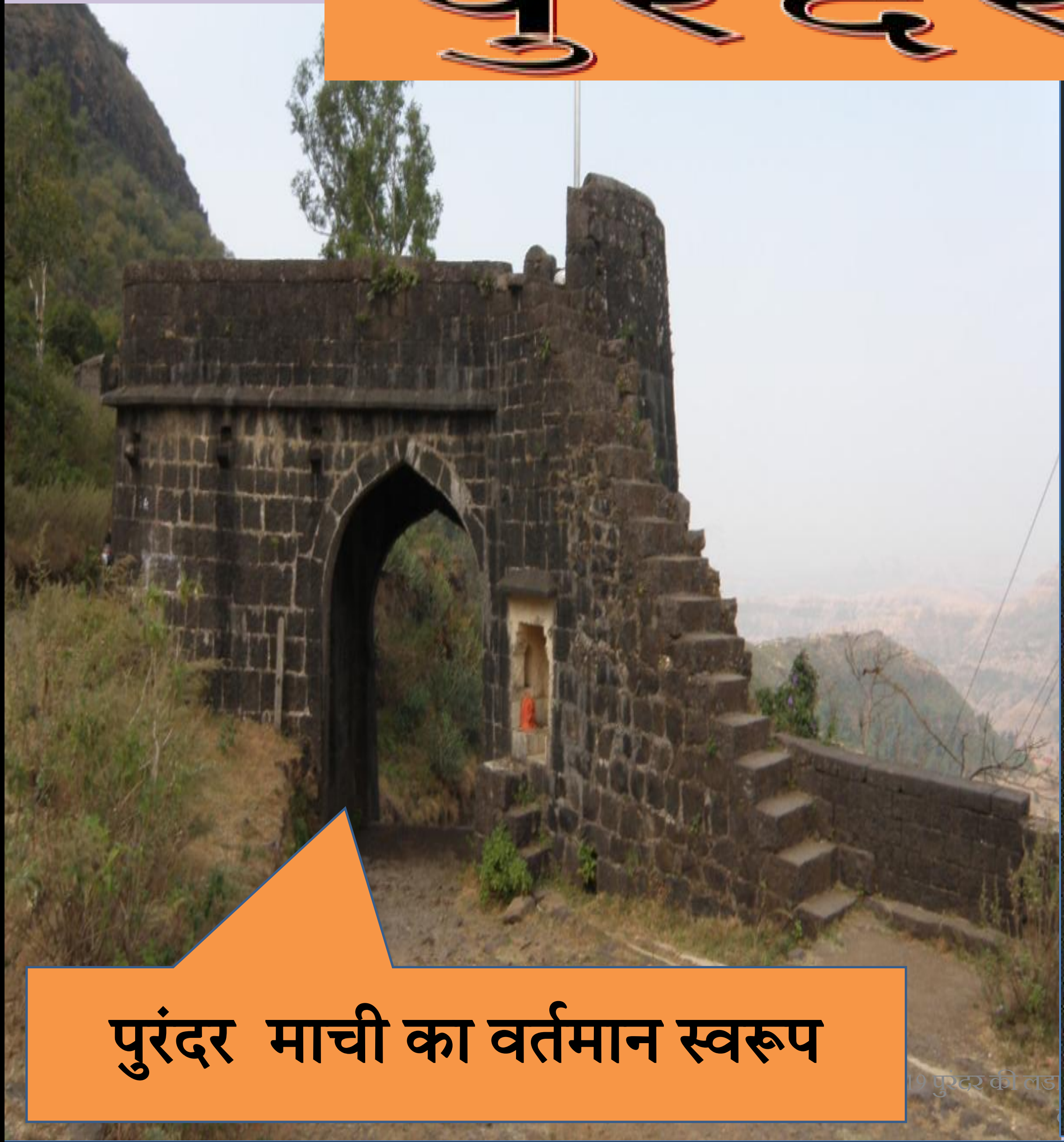
शामियाने में पुरंदर वार्तालाप में भय और समझौते की राजनीति का चित्रण भाग 2 में दिखाया गया है।



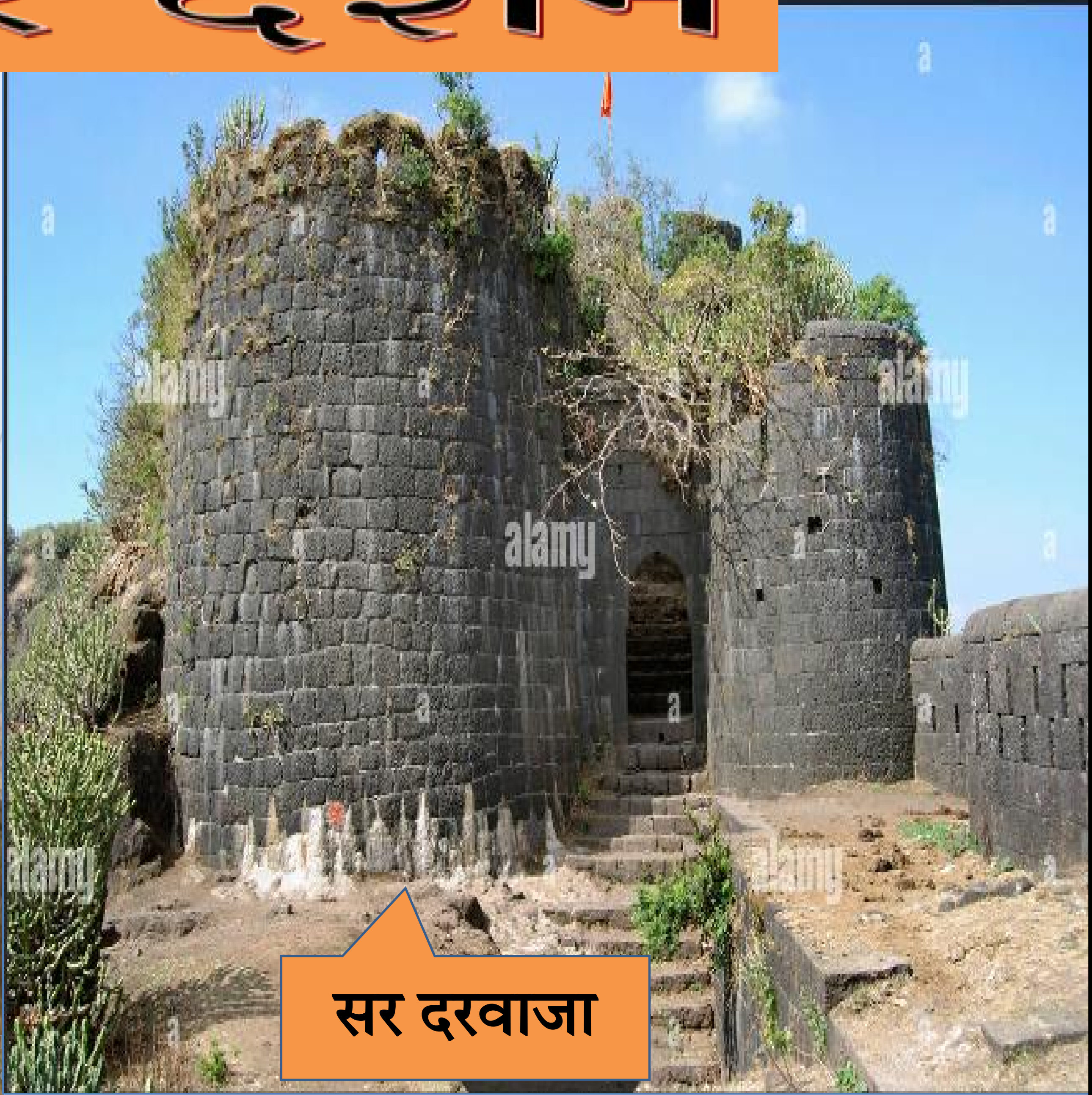
पुरंदर दर्शन


वज्र गढ़
पुरंदरगढ़ से वज्रगढ़ का दर्शन
om Purandar Fort
Suresh Isave • 7/2012

पुरंदर दर्शन



पुरंदर माची का वर्तमान स्वरूप



सर दरवाजा

सासवड से पुरंदर किले का वर्तमान दर्शन



किलेदार के माध्यम से महाराजा को सैन्य गतिविधियों की सूचना दी गई...

पुरंदर किलेदार द्वारा लगाए गए दिवे, कनिफनाथ, बोपदेव घाट के ऊपर की निगरानी टुकड़ियों ने मुगल सरदार, सेना, तोपों, हाथियों, घोड़ों, सामान ढोने वाले जानवरों की गिनती कर महाराजा को सूचित किया।



३० मार्च १६६५ तक सासवड से पुरंदर किले को घेरकर राजगढ़, सिंहगढ़, लोहगढ़ को अलग करने की चाल शुरू हुई...

दिलेर खान से पहली झड़प...



यह पहली तीखी झड़प थी।मुगलों की गतिविधियों पर नज़र रखने वाली तीनों टुकड़ियाँ बोपगाँव के पास इकट्ठा हुईं...

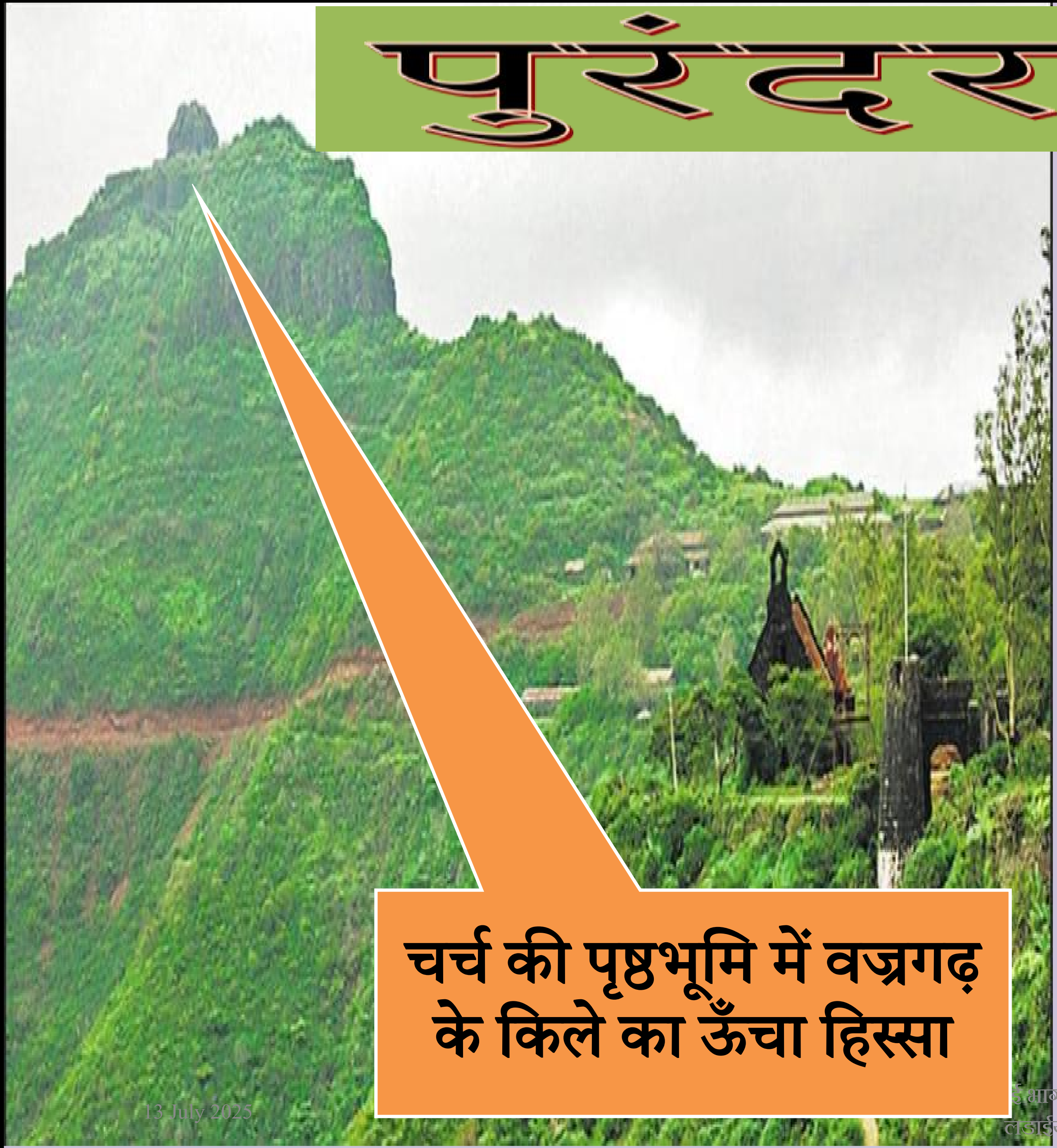
दिलेर खान अपनी फौज लेकर पुरंदर किले की ओर जाने के लिए हिवरे की पहाड़ी पार करने लगा, तभी सुबह अचानक मराठा टुकड़ियों ने मुगलों के शिविर में तोपों के पहिए तोड़ दिए और फरार हो गए।

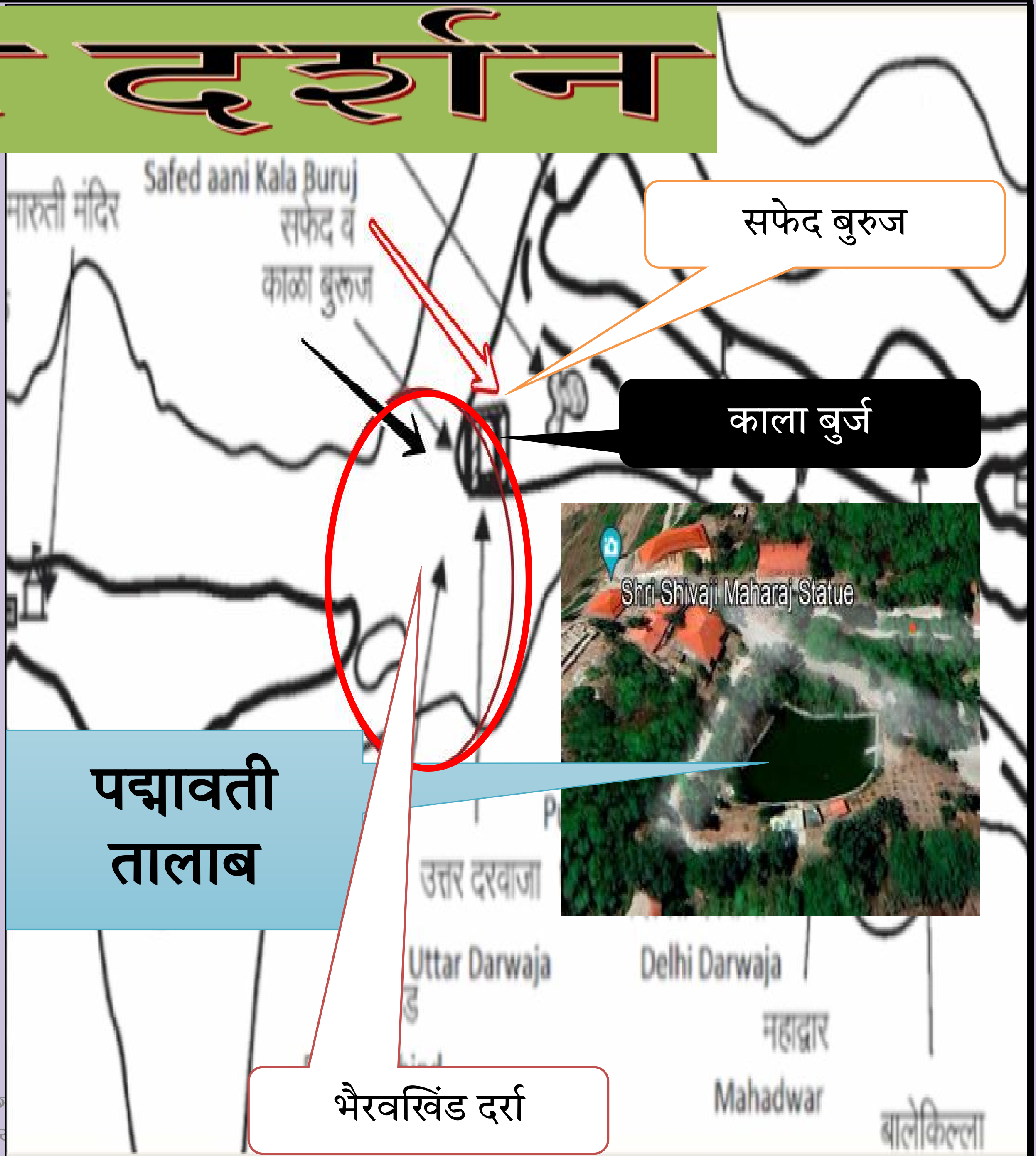
दिवाघाट चढ़ने के बाद मिर्ज़ा राजे एक गढ़ में रुके, शायद वह उस समय सासवड के पास जाधवगढ़ी जैसा रहा होगा।



आजका आलिशान जाधवगड

पुरंदर दर्शन


चर्च की पृष्ठभूमि में वज्रगढ़
के किले का ऊँचा हिस्सा


मारुती मंदिर
Safed aani Kala Buruj
सफेद व
काळा बुरूज
सफेद बुरुज
काला बुर्ज
Shri Shivaji Maharaj Statue
पद्मावती
तालाब
उत्तर दरवाजा
Uttar Darwaja
Delhi Darwaja
महाद्वार
Mahadwar
बालेकिल्ला
भैरवखिंड दर्रा

पुरंदर दर्शन



शिरवळ की ओर का दृश्य
Shri Shivaji Maharaj Statue
श्री शिवाजी महाराज पुतळा
भैरवखिंड से एक तरफ दूर नारायणपुर और दूसरी तरफ शिरवळ क्षेत्र दिखाई देता है।
भैरवखिंड क्षेत्र अब चौड़ी कंक्रीट सड़क के कारण ऐसा दिखता है।
नारायणपुर कडील परिसर दृष्य

मिर्ज़ा राजे का मुख्य शिविर और संरचना

- ❖मिर्ज़ा राजे सभी किलों को अपनी पूरी नज़र में रखने के लिए नारायणपुर के पठार पर अपने ऊँचे शामियाने में डेरा डाले हुए थे।चुनिंदा सेना, हाथी, घोड़े, शाकाहारी भोजन की व्यवस्था थी।दरबार में रोज़ाना सैन्य समीक्षा, सलाह मशविरा के लिए वकील, कारकून और हिसाब-किताब रखने वाले रहते थे।
- ❖आराम, लापरवाही, ढिलाई न हो, इसलिए प्रत्येक सरदार को दिए गए काम में फुर्सत न मिले, ताकि वे बरसात से पहले 15 मार्च से 15 जून तक 3 महीने के अंदर "सिवा का बंदोबस्त" अभियान सफलतापूर्वक पूरा करके लौट सकें।
- ❖पुरंदर किले को जीतने की जिम्मेदारी दिलेर खान को सौंपी गई थी।उन्होंने दिलेर खान की मदद के लिए तीन हज़ार और लोग और घेराबंदी के लिए आवश्यक सामग्री भेजी।

कुशल सेनापति मिर्ज़ा राजे की दूरदृष्टि

❖ मिर्ज़ा राजे स्वयं पुरंदर के अभियान पर कड़ी नज़र रखे हुए थे।

❖ उन्होंने एक ऐसी युक्ति अपनाई जिससे किला उनके शामियाने से दूर होते हुए भी नज़र में रहे कि पूरा किला नज़र में रहेगा

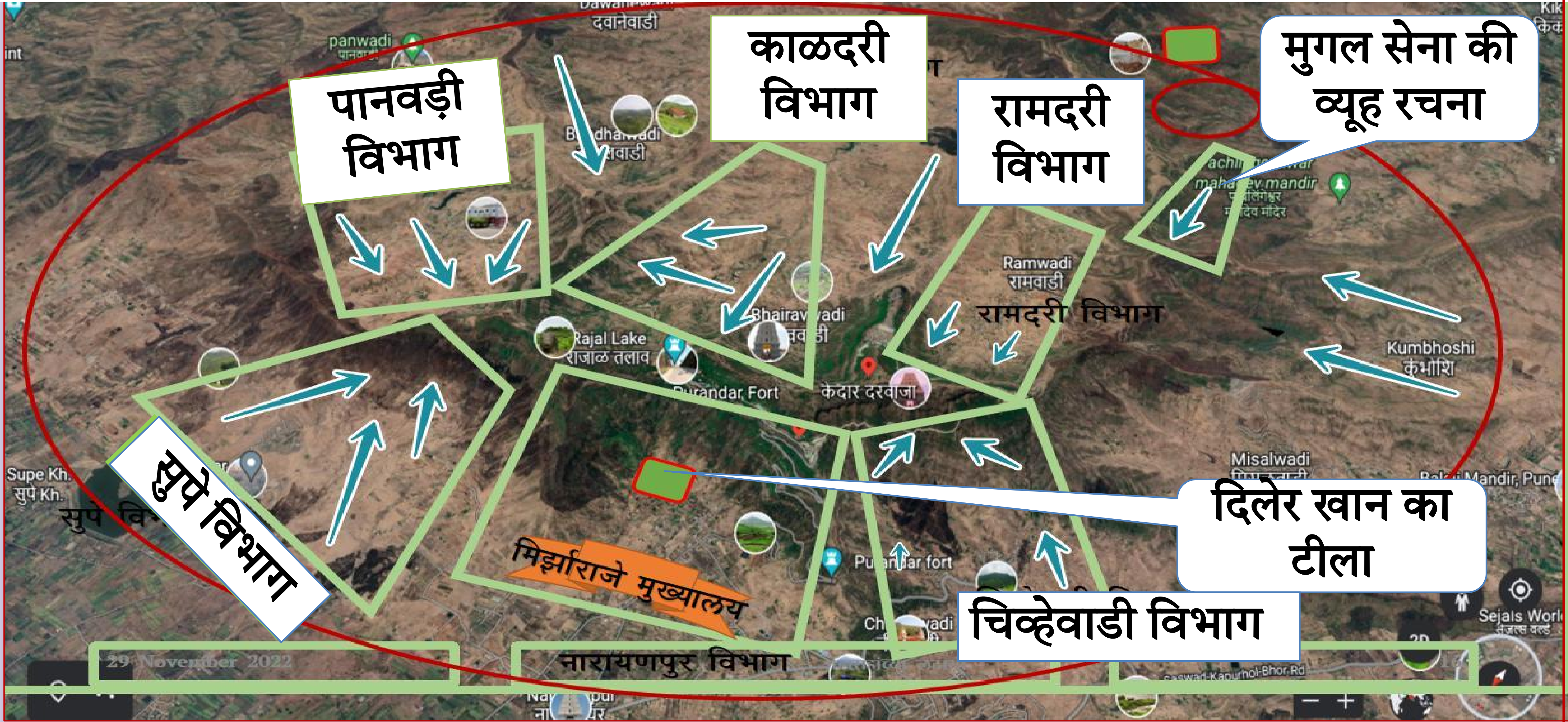


दिलेर खान ने पहाड़ी पर अग्रिम शिविर लगाए



- ❖मिर्ज़ा राजे और सिवा, ये दोनों काफ़िर हिंदू मिलकर कोई अलग योजना बना सकते हैं।
- ❖इस संभावना को जानकर औरंगज़ेब ने उन्हें नियुक्त किया था।
- ❖व्यक्तिगत पराक्रम करके पंच हज़ारी सरदार के रूप में ख़िल्लत (सम्मान) प्राप्त करना दिलेर खान का सैन्य लक्ष्य था।

पुरंदर और वज्रगढ़ को फंदा लगाया गया...



पानवड़ी, काळदरी, रामदरी में सरदार नियुक्ति और जिम्मेदारियाँ

- पानवड़ी, काळदरी, रामदरी विभाग - दाऊद खान कुरेशी एक बहुत बड़ी फौज के साथ बांदलवाडी और बहिरवाडी की घाटी में उतरा।
- इस तरफ से भैरवखिंड में जाया जा सकता है और यहीं से किले का एक और दरवाज़ा है जिसे केदार दरवाज़ा कहते हैं।
- इस तरफ से घेराबंदी मजबूत हो, इसलिए दाऊद की मदद के लिए राजा रायसिंह राठौड़, मुहम्मद सालिह क़ुर्बान, रामसिंह,
- सय्यद ज़ैनीत आबीदीन, बटवारी हुसैन दाऊद, रसूलबेग रोज़भानी, शेरसिंह राठौड़, कुंवर राजसिंह राठौड़ आदि दाऊद के साथ थे।

सुपे विभाग और दिलेर खान का विभाग

- सुपे विभाग - आतीश खान मुगलों का तोपखाना प्रमुख था ।दिलेर के गैरत अली, मुज़्ज़फ़र दिलेर के भतीजे थे ।किरतसिंह, मिर्ज़ा राजा का कुंवर (बेटा), पुरंदर और वज्रगढ़ के उत्तर से अपनी-अपनी सेना लेकर चढ़ाई करने का प्रयास करते रहे ।

- दिलेर खान का विभाग - पुरंदर की इस तरफ से घेराबंदी कसते हुए भी मराठे रात-बेरात छापे मारकर मुगलों को झटके देते रहे ।एक रात मराठों ने किले से नीचे उतरकर कीरतसिंह के मोर्चे पर हमला किया ।

मराठों की रात भर की छापेमारी गतिविधियाँ

- मराठे बार-बार रात के घने अंधेरे का फायदा उठाकर केदार दरवाज़े से नीचे उतरकर मुगल शिविरों पर छापे मार रहे थे।
- दक्षिण से एक तोप रोज़ाना पुरंदर पर आग उगलती थी।
- उसका मुँह बंद करने के लिए मराठे नीचे आए ।यह रसूलबेग का शिविर था।
- शिविर के लोग कुछ लापरवाह थे ।तब मराठों ने धावा बोलकर जो दिखा उसे काट डाला।
- एक मावले ने ऐसे अंधेरे में भी वह तोप ढूँढ निकाली और उसके कान में कील ठोककर उस पर हथौड़े से वार कर तोप को हमेशा के लिए निकम्मा कर दिया।

मुगलों की घेराबंदी की पद्धति

- ❖ शत्रु की किलेबंदी को तोड़ने के लिए दो तरीकों का इस्तेमाल किया जाता था - खनन और सैपिंग (भूमिगत खंदक खोदना)।
- ❖ खनन श्रमिक किले की दीवार के नीचे एक सुरंग बनाते थे।सुरंग से विस्फोटक जलाकर बुर्ज या दीवार में छेद करते थे।
- ❖ सैपिंग - सेना को दीवार तक छिपकर आगे बढ़ने के लिए खाई या खंदक खोदकर आवरण प्रदान करना।
- ❖ सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि भारी तोपों से दीवार की चौड़ी दीवारों और मजबूत दरवाज़ों को तोड़ने के लिए मचान उर्फ दमदमा बनाना।
- ❖ किलेदार दीवार के ऊपर से अपने सैनिकों को भेजकर खंदक खोदने वालों पर हमला न कर सकें, इसके लिए लकड़ी से छत लगाना।
- ❖ खंदक में बारूद की आग न फैले, इसके लिए खाई को टेढ़ा-मेढ़ा बनाना।

पुरंदर की घेराबंदी में मिर्ज़ा राजे की योजना

१. इकट्ठी की गई जानकारी के आधार पर, उपलब्ध लोगों से किले का नक्शा, मार्ग, तोपें लगाने के लिए दमदमे बनाने के लिए आवश्यक मज़दूर और कारीगर, लकड़ी, लोहे के घन, हथौड़े, तोपगाड़ी तोड़ने की सामग्री की गणना के लिए बैठकें होने लगी होंगी।

२. किलेदारों पर दबाव बढ़ाया गया कि सिवा इस जगह पर स्वयं लड़ने के लिए आएं, इसके लिए दिलेर खान और अन्य महत्वपूर्ण सरदारों की रोज़ाना बैठकें होने लगी होंगी।

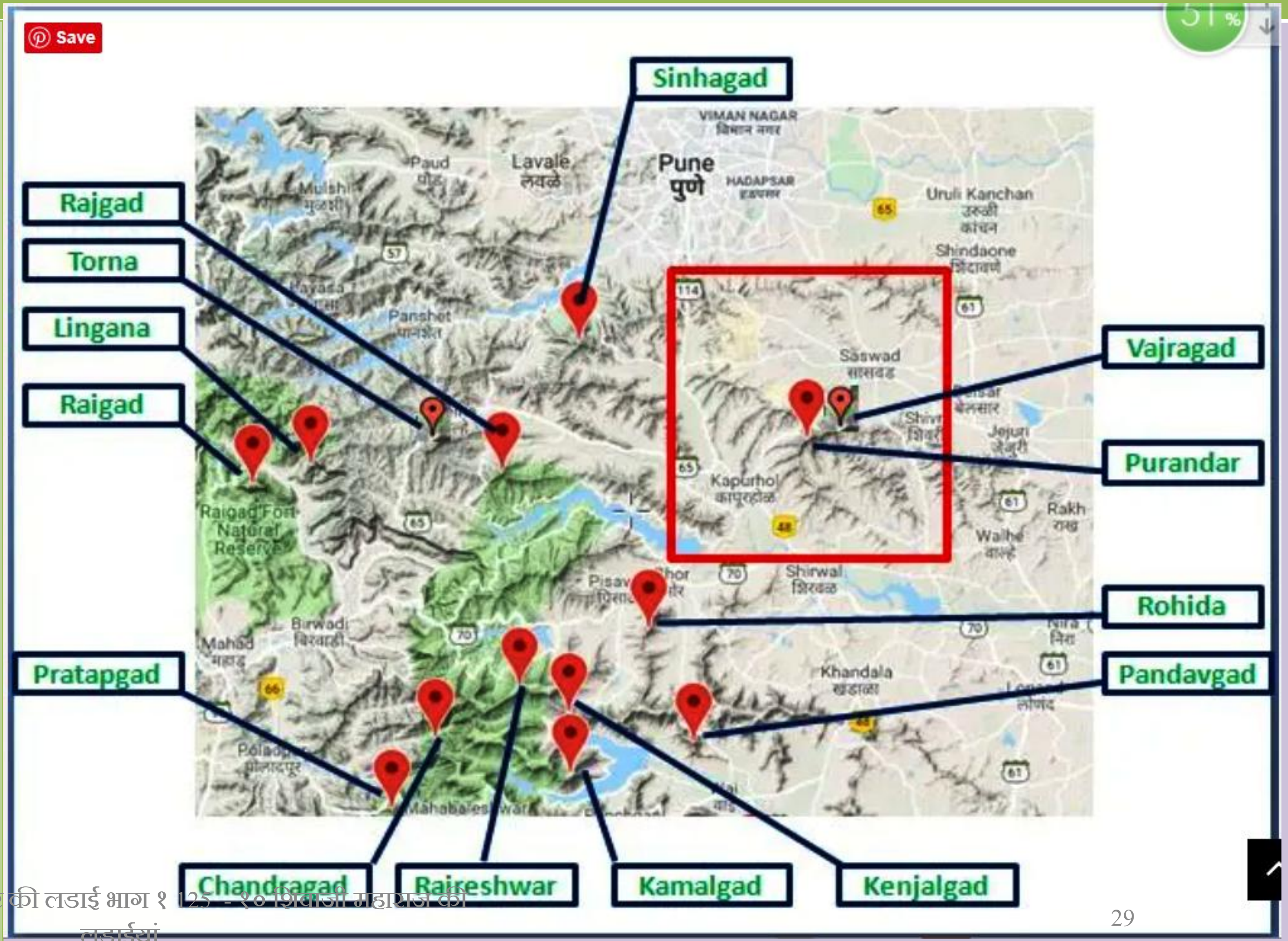
३. केवल पुरंदर पर दबाव न डालकर, सिंहगढ़, लोहगढ़, राजगढ़ को मिलने वाले सभी रास्तों पर अपनी सैन्य टुकड़ियों को भेजकर सिवा को रसद और सैन्य भर्ती से रोककर, पुरंदर और वज्रगढ़ को मदद से काटकर दोनों किलेदारों को अकेला करने का निर्णय लिया गया होगा।

सैन्य रणनीति

- ❖ पुरंदर किले की संरचना को देखते हुए, लंबी दूरी की तोपों से गोलाबारी किए बिना किला नहीं जीता जा सकता था, इसलिए अतिरिक्त तोपों की योजना बनाई गई।
- ❖ सिवा राजगढ़, सिंहगढ़ से लोहगढ़ पट्टी के किलों से सैन्य सहायता न भेज सकें, इसके लिए सरदारों को घेराबंदी करने के लिए नियुक्त किया गया।
- ❖ इसके अलावा, कुछ हज़ार घुड़सवारों को गतिशील रखकर पुरंदर को मदद से काट दिया गया।
- ❖ सिवा कोंकण में भाग न जाएं, इसके लिए कोंकण पट्टी के सिद्दी को काम पर लगाया गया।

मिर्ज़ा राजे ने पुरंदर किले को दिलेर खान द्वारा और सिंहगढ़ को स्वयं जीतने की योजना बनाई।

- ❖ मुगलों के जबरदस्त अभियान को देखकर अफ़ज़ल खान का बेटा फ़ाज़ल खान, कर्नाटक के जागीरदार, जव्हार के कोली, अन्य सरदार मिर्ज़ा के पास आते रहे।
- ❖ सिंहगढ़, राजगढ़ और पुरंदर पर कड़ी नज़र रखने के लिए सासवड को सैन्य गतिविधियों का मुख्य केंद्र बनाया गया।



सिंहगढ़, राजगढ़ और पुरंदर पर कड़ी नज़र रखने के लिए सासवड को सैन्य गतिविधियों का केंद्र बनाया गया



लोहगढ़, विसापुर और राजगढ़ की व्यवस्था





पुरंदर किला सैन्य गतिविधियों का मुख्य केंद्र



सौंपे गए कार्य पर मिर्ज़ा राजे की निगरानी

❖पुरंदर किले को जीतने की जिम्मेदारी दिलेर खान को सौंपी गई ।उन्होंने दिलेर खान की मदद के लिए तीन हज़ार और लोग और घेराबंदी के लिए आवश्यक सामग्री भेजी ।

❖मिर्ज़ा राजे स्वयं पुरंदर के अभियान पर कड़ी नज़र रखे हुए थे ।

❖उन्होंने एक ऐसी युक्ति अपनाई जिससे किला उनके शामियाने से दूर होते हुए भी नज़र में रहे ।

मुगलों की घेराबंदी की तैयारी १

- १.किले पर जाने वाले दरवाज़ों को ढूँढकर उन तक जाने वाले रास्ते बंद करना।
- २.किले के सभी दरवाज़ों पर 24 घंटे की पहरा चौकियाँ स्थापित करना।
- ३.किले से नीचे दिखाई देने वाली पहरा चौकियों को बंकर के समान छिपने की सुविधा प्रदान करना।
- ४.किले से बाहर निकलने वाले या छिपकर ऊपर चढ़ने वाले सैनिकों के अलावा अन्य लोगों को पकड़कर, ऊपरी हिस्से की संरचना, किले, बारूद, अनाज भंडारों, पानी के तालाबों की जानकारी निकालने में मदद लेना।

मुगल सरदारों को दिलेर खान द्वारा दी गई जिम्मेदारी

- ❖ ४. किले की जानकारी के अनुसार मुख्य दरवाज़े को तोड़ने के लिए तोपों, गोलों, तोपचियों को कितनी दूर और ऊँचाई पर ले जाना होगा, इसका अनुमान लगाकर, वहाँ तक तोपगाड़ी पहुँचाने के लिए रास्ता बनाना।
- ❖ ५. किले से हमले को रोकने के लिए खंदक खोदकर रास्ते में बाधाएँ उत्पन्न करना ।किले तक पहुँचने पर, बुर्जों के आसपास खंदक खोदकर उसे विस्फोटक बारूद से उड़ा देना।
- ❖ ६. छेद करके मुगल सेना को किले में जाने का मार्ग बनाना।
- ❖ ७. इस बीच, किलेदार को पैसे, पद का लालच देकर या धमकी देकर बिना सैन्य कार्रवाई के किला अपने कब्जे में लेना।

दिलेर खान के सरदार काम पर लगे

- ❖ ८. आसपास के गाँवों से रसद पहुँचाने वाले हम्माल, घोड़ों से सामान ढोने वाले, पालकियाँ या डोलियाँ ले जाने वाले लोगों को पकड़कर किले में लोगों की संख्या, सैनिकों के ठिकाने, किलेदार का नाम ढूँढकर सभी जानकारी की रिपोर्ट सरदार मिर्ज़ा राजे को दी जाने लगी।
- ❖ ९. उसके आधार पर, उपलब्ध कारीगरों से किले का नक्शा, मार्ग, मिट्टी के मॉडल बनाए गए।
- ❖ १०. तोपें लगाने के लिए दमदमे बनाने के लिए आवश्यक मज़दूरों और कारीगरों की बैठकें होने लगीं।
- ❖ ११. किलेदारों पर दबाव बढ़ाया गया कि सिवा इस जगह पर स्वयं लड़ने के लिए आएं, इसके लिए दिलेर खान और अन्य महत्वपूर्ण सरदारों की रोज़ाना बैठकें होने लगी होंगी।
- ❖ १२. केवल पुरंदर पर दबाव न डालकर, सिंहगढ़, लोहगढ़, राजगढ़ को मिलने वाले सभी रास्तों पर अपनी सैन्य टुकड़ियों को भेजकर सिवा को रसद और सैन्य भर्ती से रोककर, पुरंदर और वज्रगढ़ को मदद से काटकर दोनों किलेदारों को अकेला करने का निर्णय लिया गया होगा।

सिवा को रसद और सैन्य भर्ती से रोककर, पुरंदर और वज्रगढ़ को मदद से काटकर दोनों किलेदारों को अकेला करने का निर्णय




भैरवखिंड की रक्षा के लिए मजबूत उत्तर दरवाज़ा और उसे मज़बूती देने के लिए सफेद और काला बुर्ज दोनों तरफ से, या एक के पीछे एक होने चाहिए...
Stragic reserves
1985
Image © 2022 Maxar Technologies
Google Earth
Imagery Date: 4/25/2022 18°16'56.17" N 73°59'04.96" E elev 1223 m eye alt 1.34 km

वज्रगढ़ की माची से सटाकर लकड़ी के मचान (दमदमे) मई महीने के पहले हफ़्ते में लगाए गए।



दमदमे तैयार करके काले और सफेद बुर्ज पर गोले गिरने लगे...

दमदमा 1

दमदमा २

दमदमा ३

तोप के गोलों से दीवार को ध्वस्त करते हुए ऊपर से पलीते वाले तीरों की वर्षा...



दमदमा, लकड़ी के अवरोध, छत का गाड़ी (प्रतिनिधिक चित्र)

कालदरी की ओर के मचान पर लगाई गई तोप को रात में अचानक छापा मारकर तोड़ दिया गया।

मुगलों द्वारा बड़ी मेहनत से लगाया गया मचान (दमदमा) और उस पर लगाई गई तोप को रात में अचानक हमला करके तोड़ दिया गया ।ऐसे हमले होते देखकर दिलेर खान ने अपने सैनिकों को और अधिक उत्साह से लड़ने के लिए प्रेरित किया ।



प्रातिनिधिक चित्र



प्रातिनिधिक चित्र

पुरंदर का सफेद बुर्ज विस्फोट में उड़ गया।



पुरंदर का सफेद बुर्ज विस्फोट में उड़ गया।

- ❖ सफेद बुर्ज को निशाना बनाकर दिलेर खान के नेतृत्व में मुगलों की तोपें गरजने लगीं।
- ❖ खंदक से दीवारों के नीचे सुरंग बनाकर बारूद भरकर दीवारों में छेद किए जाने लगे।
- ❖ पुरंदर का शिकंजा चारों ओर से कसने लगा।
- ❖ चारों ओर से हमलों को रोकने के लिए सैन्य बल कम पड़ने लगा।
- ❖ किले पर ७०० लोगों के भोजन की व्यवस्था का भार सहन नहीं हो रहा था।
- ❖ बरसात के बादल घिरने और रसद मिलने की संभावना समाप्त हो गई।
- ❖ उस अफरातफरी के समय बारूद के भंडार में आग लग गई और लगभग ८० मराठों की जान चली गई।
- ❖ फिर भी मराठे मई के १५ तक और अगला एक हफ़्ता लड़ते रहे।

महाराजा की गतिविधियाँ

- प्रत्येक किले पर घेराबंदी होने के कारण शिवाजी महाराज पुरंदर पर सैन्य बल नहीं बढ़ा सकते थे ।स्थिति की गंभीरता को पहचानते हुए, किलेदार मुरारबाजी देशपांडे ने दिलेर खान के शिविर पर छापा मारकर उसे मारने के लिए एक बड़ा अभियान चलाया ।

- शिवाजी महाराज अब और अधिक समय तक खींचकर किला गँवाने का समय आता तो उसके बाद प्रत्येक किले पर हमले में सैन्य हानि होकर किले छोड़ने पड़ते, ऐसा विचार कर प्रधान मंडल से सलाह-मशविरा कर रहे थे ।

मई का अंतिम हफ़्ता। प्रतापगढ़ में भवानी माता के दर्शन से संधि की बातचीत करने की प्रेरणा मिली।

- ❖संधि की संभावना की जाँच के बाद, पत्र व्यवहार करके मुगलों की ओर से नेतृत्व करने वाले मिर्ज़ा राजे से संपर्क साधा गया।
- ❖ वकील रघुनाथराव की मध्यस्थता के बाद, बेल-भंडारा उठाकर जीवन को कोई हानि नहीं होगी, ऐसा शपथपूर्वक आश्वासन मिलने पर शिवाजी महाराज ने मुलाकात की तैयारी शुरू की।
- ❖ मान-सम्मान के नज़राने, पोशाक, जाने का मार्ग, वाहन व्यवस्था, मुलाकात की जगह की पुष्टि करके १० जून को संधि करने के लिए महाराज राजगढ़ से नारायणपुर तक अपने अंगरक्षकों के साथ घोड़ों पर, फिर मुगल सरदार की देखरेख में चिव्हेवाडी शिविर में हाथी पर आए।
- ❖ बाद में मिर्ज़ा राजे के शानदार शामियाने में पालकी से पहुँचे होंगे।

वज्रगढ़ किलेदार का कार्य

- उस किले के किलेदार को मुगल शिविर पर अचानक हमले करते रहना था।
- विशेषकर भोजन के समय, नमाज़ के समय, सुबह सूर्योदय से पहले अंधेरे में हमले करके मुगल सेना के कारीगरों को दमदमे बनाने, खंदक खोदने आए लोगों को घायल करना, यह कार्य पहले से ही सौंपा गया था।
- दमदमा बनाने वाला तोपची रसूलबेग का शिविर था।
- शिविर के लोग कुछ लापरवाह थे।
- मराठों ने धावा बोलकर जो दिखा उसे काट डाला।

वज्रगड किल्लेदार की कामगिरी १

- ❖ एक मराठे ने ऐसे अंधेरे में भी वह तोप ढूँढ निकाली और उसके कान में कील ठोककर उस पर हथौड़े से वार कर तोप को हमेशा के लिए निकम्मा कर दिया।
- ❖ मराठे फिर से रात के घने अंधेरे का फायदा उठाकर केदार दरवाज़े से नीचे उतरे।
- ❖ दक्षिण से एक तोप रोज़ाना पुरंदर पर आग उगलती थी।
- ❖ उसका मुँह बंद करने के लिए मराठे नीचे आए।
- ❖ किला छोड़ने का समय आता तो उन्हें पुरंदर के किले का आश्रय लेना था।
- ❖ यह पहले से तय था।

वज्रगड किल्लेदार की कामगिरी २

- फिर भी मराठे मई के १५ तक और अगला एक हफ़्ता लड़ते रहे।
- प्रत्येक किले पर घेराबंदी होने के कारण शिवाजी महाराज पुरंदर पर सैन्य बल नहीं बढ़ा सकते थे।स्थिति की गंभीरता को पहचानते हुए, किलेदार मुरारबाजी देशपांडे ने दिलेर खान के शिविर पर छापा मारकर उसे मारने के लिए एक बड़ा अभियान चलाया।
- शिवाजी महाराज अब और अधिक समय तक खींचकर किला गँवाने का समय आता तो उसके बाद प्रत्येक किले पर हमले में सैन्य हानि होकर किले छोड़ने पड़ते, ऐसा विचार कर प्रधान मंडल से सलाह-मशविरा कर रहे थे।

वज्रगढ़ मुगलों के कब्जे में आया - १४ अप्रैल १६६५

- ❖ दिलेर खान का विभाग - पुरंदर की यह घेराबंदी कसते हुए दिलेर खान स्वयं नेतृत्व कर रहा था, कारीगरों के लिए भोजन-पानी के अलावा किलेबंदी उड़ाने के लिए बारूद की बोरियों का परिवहन, पलीते वाले तीरों से आग न लगे, इसके लिए खंदकों को ऊपर से ढँकना, इन कामों पर व्यक्तिगत रूप से निगरानी कर रहा था।
- ❖ पानवड़ी विभाग के मुगल सरदार ने वज्रगढ़ पर पिछली तरफ से हमला करने की योजना बनाई थी ।काळदरी विभाग प्रमुख दाऊद खान कुरेशी एक बहुत बड़ी फौज के साथ बांदलवाडी और बहिरवाडी की घाटी से वज्रगढ़ पर हमला करने की योजना बना रहा था।
- ❖ रामदरा विभाग की सरदारों की टुकड़ियों ने भैरवखिंड पर एक साथ हमले का अभियान शुरू किया ।सुपे विभाग में आतीश खान मुगलों का तोपखाना प्रमुख था ।दिलेर के गैरत अली, मुज़्ज़फ़र भतीजे थे।
- ❖ किरतसिंह, मिर्ज़ा राजा का बेटा, पुरंदर और वज्रगढ़ के उत्तर से तोप और दमदमे के निर्माण का काम पूरा होने पर, चारों तरफ से एक साथ हमला करके वज्रगढ़ को कब्जे में लेने का अभियान 14 अप्रैल को सफल हुआ।

इधर संधि और उधर मुरारबाजी का पराक्रम ... ७०० वीर दिलेर खान पर टूट पड़े



पुरंदर किले के युद्ध में मुरारबाजी का प्राणों का बलिदान अमर हो गया।

- ❖वह तारीख ११ जून १६६५ थी।
- ❖शायद शिवाजी महाराज के दल को किले की माची से मिर्ज़ा राजे के शामियाने में आते देखकर मुरारबाजी ने अपने बचे हुए ७०० से कम मावलों को ४ कंपनियों में बाँटकर दिलेर खान को मारने के लिए अंतिम अभियान की योजना बनाई होगी।
- ❖दिलेर खान को मारने का अंतिम अभियान शुरू हुआ।



कड़े हमले की शुरुआत १

❖ दिलेर खान को मारने का अंतिम अभियान शुरू हुआ।

❖ मुरारबाजी के मावले किले से ३ रास्तों से अंधेरे का फायदा उठाकर अन्य मुगलों के तंबुओं से बचते हुए दिलेर खान के तंबू को घेरने लगे।

❖ कंपनी १, २ तय किए गए टीले के पास पहुँचीं।

❖ सुबह की अज़ान से पहले दिलेर खान को कुछ कदमों की आहट सुनाई दी और उसने तलवार हाथ में ले ली।सिर पर पगड़ी और शरीर पर चादर लेकर वह शामियाने के बाहर झाँका।

❖ उसी समय, मराठों को हमला करने के लिए तैयार देखकर, उसने " अल्लाह हो अकबर, दीन दीन" का नारा लगाकर अपने सैनिकों को जगाया।



कड़े हमले की शुरुआत २

- ❖ मुरारबाजी ने दिलेर खान को देखा और तलवारें टकरा गईं।
- ❖ कंपनी कमांडरों ने अपने-अपने दिए गए तंबुओं में जानवरों और उनकी निगरानी करने वाले लोगों पर हमला किया।
- ❖ दिलेर खान अकेला पड़ गया ।तब तक हुए शोर से आसपास के मुगल सरदार और सैनिक हथियार लेकर आगे बढ़े।
- ❖ मुरारबाजी को घेर लिया गया। उस गंभीर स्थिति में मुरारबाजी ने जोर-जोर से अपनी सेना को "हरहर महादेव" का वीरतापूर्ण नारा देकर प्रेरित किया।



पुरंदर किले का युद्धक्षेत्र - स्वराज के लिए मुरारबाजी का बलिदान

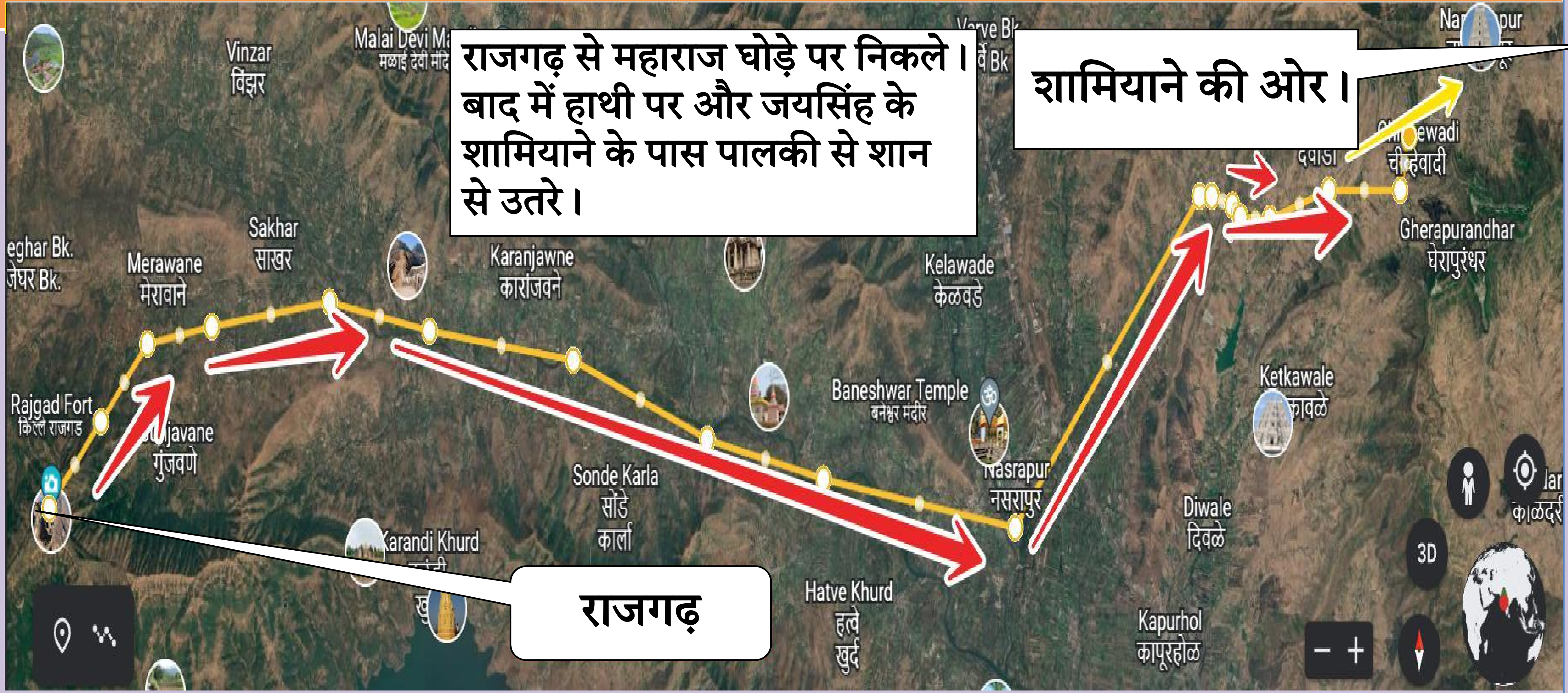
पुरंदर का युद्ध और मुरारबाजी की शौर्य गाथा

- मुरारबाजी के सामने दिलेर खान था, लेकिन घिरे होने के कारण शारीरिक हमला करने के प्रयास में उसे सामने वाले की तलवार के वार से बचते हुए हमला करने का मौका नहीं मिल रहा था।
- तलवारों के वार को ढाल पर ले रहे थे।
- उन्होंने फुर्तीली हरकतों से कई लोगों को घायल किया।
- उस वीरतापूर्ण शस्त्र संचालन को देखकर दिलेर खान प्रभावित हुआ।
- उसने चिल्लाकर कहा, "तुम हमारी तरफ से लड़ो ।तुम्हें इनाम और सम्मान दूँगा ।"

स्वराज के लिए मुरारबाजी का बलिदान

- ❖मुरारबाजी ने एक सैनिक की छाती में तलवार घोंपकर जवाब दिया।
- ❖अब युद्ध एक बनाम अनेक ऐसा होने के कारण मुरारबाजी के शरीर पर कई वार हुए और उन्होंने शिवाजी महाराज के स्वराज यज्ञ में अपनी आहुति दी।
- ❖तब तक चारों कंपनियों के मावले घिरे जाने के कारण वीरगति को प्राप्त हुए।
- ❖कुछ दूर छिपे हुए लोगों को तीरों से मार डाला गया।
- ❖इस प्रकार, पुरंदर किले के युद्ध में मुरारबाजी का प्राणों का बलिदान अमर हो गया।

राजगढ़ से पुरंदर के पास चिन्हेवाडी तक शिवाजी महाराज का सैन्य बल के साथ शामियाने तक आने का मार्ग



भव्य शामियाने में प्रवेश।

भाग २

